- खगडिया संस्करण
- वर्ष: 5
- अंक: 159
- मूल्य ₹ 2.00
- पृष्ठ 04
- Reg: UDYAM-BR-17-0007168

दैनिक बिहार पत्रिका

सच के साथ

पटना। गुरुवार, 07 नवंबर 2024 | सम्पादक: कृष्णा टेकड़ीवाल | web_dainikbiharpatrika.com | Email_ dainikbiharpatrika@gmail.com

अस्ताचलगामी सूर्य को आज दिया जाएगा अर्घ्य

लोगों ने ग्रहण किया खरना का प्रसाद, बाजारों में बढ़ी रौनक

दैनिक बिहार पत्रिका/समस्तीपुर

विद्यापतिनगर। चार दिवसीय लोक आस्था के महापर्व छठ के दूसरे दिन बुधवार को व्रतियों ने दिनभर उपवास रख कर खरना का महाप्रसाद बनाया तथा विधिवत पूजा अर्चना की। छठ महापर्व में खरना के प्रसाद का विशेष महत्व है। खरना के साथ ही छठ व्रतियों का 36 घंटे का उपवास शुरू हो गया। गुरुवार को अस्ताचलगामी सूर्य को प्रथम अर्घ्य दिया जाएगा। इसको लेकर एक ओर जहां बाजारों में फलों की दुकानें सज चुकी है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक कार्यकर्ताओं और युवाओं द्वारा छठ घाटों की साफ-सफाई व साज-सज्जा के काम को अंतिम रूप दिया जा रहा है। प्रखंड के शेरपुर, मऊ, मड़वा, वाजिदपुर कष्टहारा, मिर्जापुर गंज, खनुआं, हरपुर बोचहा, तथा बढ़ौना में गंगा की सहायक बाया नदी के छठ घाटों की साफ सफाई एवं साज-सज्जा की गई

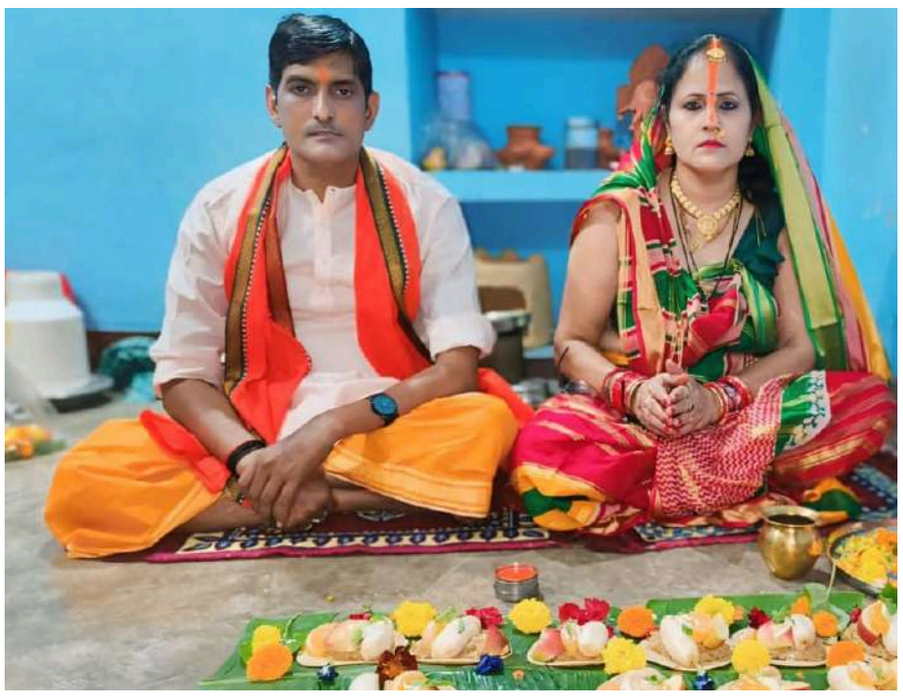

है। इसके अलावा विद्यापतिनगर सहित विभिन्न पंचायतों में तालाबों एवं जलाशयों के साथ-साथ मोहल्ले में गड्ढा खोदकर छठ की तैयारी की गई है। प्रखंड के मऊ धनेशपुर दक्षिण के अखाड़ा घाट पर नवयुवक छठ पूजा समिति के द्वारा छठ महोत्सव का आयोजन किया गया है। इसके तहत मंडप का निर्माण, मूर्ति पूजा के साथ-साथ अखाड़ा घाट पर प्रकाश, सड़कों की साफ-सफाई एवं छठ घाट तक आने वाली सभी मुख्य सड़कों पर लाइटिंग एवं तोरण द्वार लगाई गई है। चार दिवसीय लोक आस्था के महापर्व छठ पूजा को लेकर बुधवार को प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न बाजारों एवं चौक-चौराहों पर फलों की दुकानों सज चुकी है, वहीं भारी संख्या में सुबह से लोग खरीदारियों में व्यस्त रहे। सबसे अधिक भीड़-भाड़ वाजिदपुर तथा मऊ बाजार में देखने को मिली। जहां लहेरिया चौक से गुदरी बाजार तक सड़क के दोनों ओर सजी फल की दुकानों पर लोगों ने जमकर खरीददारी की। हालांकि सेव, संतरा, नारंगी, केला, नारियल, अमरूद आदि की बढ़ी हुई कीमत से लोग परेशान रहे। वहीं वाजिदपुर और विद्यापतिनगर में भी देर शाम तक दुकानें खुली रही। दूर-दूर से आए श्रद्धालुओं ने छठ महापर्व के मद्देनजर विभिन्न वस्तुओं को खरीदा।

छठ व्रतियों ने किया खरना

आज दिया जाएगा डूबते सूर्य को अर्घ्य

दैनिक बिहार पत्रिका /छपरा

छठ पूजा के दूसरे दिन बुधवार को खरना की परंपरा पूरे विधि विधान से की गई। खरना के प्रसाद बनाने के लिए छठव्रती कुआं और नदी से जल लाकर करना का प्रसाद बनाते हैं उसके बाद ग्रहण करते है। छपरा शहर के घाट नदी से बड़ी संख्या में लोग खरना का प्रसाद बनाने के लिए जल भरी किया। बता दे इस दिन व्रती मीठा भोजन कर व्रत की शुरुआत करते हैं, इसके बाद 36 घंटे तक अन्न-जल ग्रहण नहीं किया जाता। छठ का महापर्व 5 नवंबर को नहाय खाय परंपरा के साथ शुरू हो गया है। सूर्य देव की उपासना के लिए छठ बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है, छठ महापर्व का दूसरा दिन खरना के नाम से जाना जाता है।खर यानी शुद्ध अर्थात इस दिन पुनः शुद्धि और पवित्रता पर जोर दिया जाता है। खरना का प्रसाद ग्रहण करने के बाद ये व्रत शुरू हो जाता है।

खरना के दिन शाम में मिट्टी के चूल्हे और आम की लकड़ी पर खाना बनाते हैं। इसके बाद केले के पत्ते पर खाना खाने का रिवाज है, खाने में रोटी और गुड़ की बनी खीर के साथ ही केला खाने का भी विधान है। गुरुवार को डूबते सूर्य को अर्घ्य प्रदान किया जाएगा। जबकि शुक्रवार को उगते सूर्य के अर्घ्य देने के साथ ही यह महापर्व समाप्त होता है। वही नदी घाटों तालाबों को दुल्हन की तरह सजाया गया है।

संक्षिप्त खबर

पिस्टल दिखा सीएसपी संचालक से 20 हजार की लूट

दैनिक बिहार पत्रिका/छपरा

मशरक थाना क्षेत्र के डुमरसन रेलवे ढाला के पास हथियार से लैस दो बदमाशों ने दिनदहाड़े पिस्टल के बल पर सीएसपी संचालक से 20 हजार 4 सौ 70 रू की लूट कर ली। बदमाशों ने बुधवार के करीब 11 बजे घटना को अंजाम दिया है। सीएसपी संचालक कर्ण कुदरिया गांव निवासी मिथलेश सिंह चंदेल जो डुमरसन रेलवे ढाला के पास भारतीय स्टेट बैंक का ग्राहक सेवा केंद्र चलाते हैं। घटना की सूचना मिलने पर थानाध्यक्ष अजय कुमार ने दल बल के साथ पहुंच मामले में जांच पड़ताल कर रही है। सीएसपी संचालक मिथलेश सिंह चंदेल ने बताया कि वे काउंटर पर बैठें थे उसी दौरान दो युवक पहुंचे और रूपये निकालने की बात करते हुए पिस्टल निकाल भिड़ा दिया और काउंटर से रूपये निकाल फरार हो गए और बाहर खड़ी बुलेट की हंटर बाइक पर सवार होकर लखनपुर की तरफ फरार हो गए। मामले में थाना पुलिस जांच में जुटी है।

नीलाम पत्र के निष्पादन में तेजी लाने का दिया गया निर्देश

दैनिक बिहार पत्रिका/बांका

जिला पदाधिकारी, बांका अंशुल कुमार के निर्देश पर नीलाम पत्रवाद से संबंधित समीक्षात्मक बैठक वरीय उप समाहर्ता, बांका अपेक्षा मोदी के द्वार की गई। बैठक में नीलाम पत्रवाद से संबंधित मामलों की समीक्षा की गई तथा नीलाम पत्र के निष्पादन में तेजी लाने का निर्देश दिया गया। बैठक में शाखा प्रबंधक, दक्षिण बिहार ग्रामीण , बैंक उपस्थित थे।

नहाय-खाय के बाद व्रती ने खरना का प्रसाद किया ग्रहण, 36 घंटे का निर्जला उपवास शुरू

दैनिक बिहार पत्रिका/ बांका

जिले सहित प्रखंड छेत्र में नहाय-खाय के बाद व्रती ने खरना का प्रसाद ग्रहण किया। बुधवार शाम को गुड़ और चावल की खीर बनाकर उसका भोग लगाया गया। इस प्रसाद को ग्रहण करने के बाद ही व्रती निर्जला व्रत रखकर अगले दिन यानी गुरुवार शाम को अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य देंगी और शुक्रवार को उगते हुए सूर्य को अर्घ्य देकर संतान और परिवार के लिए मंगल कामना करेंगी। छठ पूजा के दूसरे दिन खरना पूजा का भी विशेष महत्व होता है। खरना छठ पूजा के सबसे महत्वपूर्ण पूजा दिनों में से एक है। इस दिन छठी मैया का आगमन होता है जिसके बाद भक्त 36 घंटे का निर्जला उपवास शुरू करते हैं। छठ पर्व में शुद्धता का विशेष महत्व माना जाता है। अधिकतर छठवर्ती खरना का प्रसाद मिट्टी के बने नये चूल्हे पर ही बनातीं हैं। खरना पूजा के समय और प्रसाद ग्रहण करते समय बाहर से तेज आवाज नहीं आना चाहिए। इस दौरान घर से सदस्यों को तेज आवाज में बोलने या बम-फटाका फोड़ने या कोई अन्य तेज आवाज काम करने से मना किया जाता है। क्यों कि मान्यता है कि खरना पूजा के समय या खरना प्रसाद ग्रहण करते समय तेज आवाज सुनने या शोर-शराबा व्रत में बाधा उत्पन्न

करती है। मान्यता यह भी है प्रसाद ग्रहण करते समय व्रती के कान में तेज आवाज आने से वह तत्काल भोजन छोड़ देती हैं। इसलिए तेज आवाज न हो, इसका खास ध्यान रखा जाता है।

24 वर्षीय मुक बधीर युवक हुआ लापता

दैनिक बिहार पत्रिका/चांदन/बांका

आनंदपुर थाना क्षेत्र के सिधूडीह गांव के आंगनबाड़ी सेविका के 24 वर्षीय पुत्र शिवनंदन कुमार पिता बालकृष्ण मंडल बीते चार नवंबर को घर से लापता हो गया है। इस संदर्भ में लापता पुत्र के पिता बाल कृष्ण मंडल ने आनन्दपुर थाना में गुमशुदगी का आवेदन देकर पुत्र कि बरामदगी गुहार लगाया है। आवेदन में बताया कि मेरा पुत्र शिवनंदन कुमार सोमवार को हटिया के दिन टी शर्ट और जींस पहन कर घर से निकल गया।देर रात तक घर नहीं लौटने पर काफी खोजबीन करने पर पता चला कि कटोरिया रेलवे स्टेशन गया है। फिर वहां से कहां चला गया जिसका कोई अता-पता नहीं है। बताया कि पुत्र का रंग साँवला और बोल नहीं सकता है।जिसका लम्बाई 5 फिट 8 इंच, पहचान चिन्ह - दोनों हाथो में छः छः अंगुली है।सम्पर्क सूत्र 9102907515,7549463 680 जारी कर लोगों से अपील किया।

छठ के दूसरे दिन खरना व्रत के साथ निर्जला उपवास शुरू

दैनिक बिहार पत्रिका/बौंसी/बांका

चार दिवसीय महापर्व छठ को लेकर दूसरे दिन बुधवार को खरना का व्रत रखा गया। छठ पर्व का व्रत रखने वाले सूर्य भक्तों ने बुधवार की संध्या खरना का प्रसाद ग्रहण कर लोगों के बीच वितरित किया गया। दूध गुड अन्य सामग्री से तैयार करना का प्रसाद सर्वप्रथम भगवान भास्कर को नमन कर व्रत करने वाले लोगों ने ग्रहण किया इसके बाद इसे प्रसाद के साथ सूर्य भक्तों ने ग्रहण किया जिसमें कटोरिया विधानसभा के विधायिका निक्की हेंब्रम कई अधिकारी मौजूद थे इसके साथ ही निर्जला उपवास भी शुरू हो गया। आज प्रथम संध्या अर्घ्य है कल सुबह का अर्घ्य दान किया जाएगा।

छठ घाट का लिया जायजा

दैनिक बिहार पत्रिका/चांदन/बांका

जिला पदाधिकारी बांका के निर्देश पर आनंदपुर थाना अध्यक्ष विपिन कुमार ए एस आई उमेश कुमार आदि पुलिस बल ने बुधवार 6 नवंबर को थाना क्षेत्र के विभिन्न छठ घाट सहित कुसुम जोरी पंचायत खरना बडुआ नदी एवं उतरी बारने पंचायत के बगरा गांव अवस्थित करेंगवा नदी के छठ घाट पर व्यवस्था संधारण तथा छठ व्रतियों को सुविधा उपलब्ध कराने हेतु निरीक्षण किया, तथा दुर्गम छठ घाट पर समाजसेवियों से सहयोग लेकर जेसीबी मशीन लगाकर समतलीकरण के आलावा साफ सफाई कराया गया। ताकि छठ व्रतियों को किसी प्रकार कि असुविधा नहीं हो। इस संबंध में आंनदपुर थाना अध्यक्ष विपिन कुमार ने बताया कि छठ पर्व को लेकर संवेदनशील/ अतिसंवेदनशील इलाके एवं खतरनाक छठ घाटों का जांच किया जा रहा है, आगे उन्होंने बताया कि 7 नवंबर गुरुवार को अस्ताचलगामी एवं 8 नवम्बर शुक्रवार को उदीयमान सूर्य को अर्घ्य दिया जाएगा। इस दौरान सभी छठ घाटों पर पुलिस बल तैनाती एवं गस्ती रहेगी। किसी भी तरह कि अफवाहों पर ध्यान नहीं देना है।

बाराहाट बीडीओ ने छठ घाटों का किया निरीक्षण

दैनिक बिहार पत्रिका/बाराहाट/बांका

लोक आस्था का महापर्व सूर्य उपासना छठ पर्व को लेकर जिला पदाधिकारी बांका अंशुल कुमार के आदेशानुसार सम्बंधित क्षेत्र के पदाधिकारियों को जिला मुख्यालय के साथ-साथ जिले के सभी प्रखंडों के घाटों का निरीक्षण करने कड़ी निर्देश दिया गया था। जिसके आलोक में बाराहाट प्रखंड के बीडीओ ने सोनडीहा दक्षिणी पंचायत के राधानगर स्थित सोनडीहा पोखर अवस्थित छठ घाट का निरीक्षण किया। मौके राधानगर के समाजसेवी ग्रामीणों से रूबरू हुए तथा छठ घाट पर विभिन्न समस्याओं का निवारण हेतु आश्वासन दिए। वहीं समाजसेवी राधानगर निवाशी गौतम कुमार यादव ने बताया कि सोनडीहा पोखर में स्थानीय प्रशासन कोई पहल नहीं करने के बाद हम ने बाराहाट बीडीओ को इसकी जानकारी दिए थे। जिसको लेकर बाराहाट बीडीओ ने जॉच कर घाटों साफ सफ़ाई व महिला व्रतियों के लिए अस्थाई चेंजिंग रूम बनवाने को लेकर आश्वासन दिया गया हैं।

पत्थर से सर कुचकर 30 वर्षीय महिला की की गई निर्मम हत्या ,क्षेत्र में फैली सनसनी

दैनिक बिहार पत्रिका/कामेश्वर साह

जांच में जुटी पुलिस

फुल्लीडुमर/बांका|थाना क्षेत्र के फुल्लीडुमर बांध होकर जतकुटिया गांव जाने वाले वन क्षेत्र के मार्ग में जतकुटिया एवं सावा लाख बाबा के बीच झाड़ी के पास आज 6 नवंबर 2024 बुधवार को एक 30 वर्षीय महिला की पत्थर से सर कुचकर निर्मल तरीके से हत्या कर देने का सनसनीखेज मामला प्रकाश में आया है। आसपास के गांव के चरवाहे में खून से लथपथ एक मृत महिला का शव देख इसकी सूचना ग्रामीणों एवं पुलिस को दी। सूचना मिलते ही शव को देखने आसपास के ग्रामीणों की घटना स्थल पर भीड़ लग गई। लेकिन मृत महिला के शव की किसी ने पहचान नहीं कर सका। सूचना पर फुल्लीडुमर थाना अध्यक्ष बबलू कुमार, अपर थाना अध्यक्ष राजीव रंजन, दरोगा शरद श्रीकांत, पीटीसी आशीष कुमार दलबल के साथ घटनास्थल पर स्थानीय चौकीदार के साथ पहुंचे। इसके बाद बांका एसडीपीओ विपिन बिहारी एवंफोरेंसिक विभाग की टीम घटनास्थल पर पहुंची एवं घटनास्थल पर पत्थर में लगे खून, चप्पल, पत्थर से मुंह कुचलने के कारण जमीन पर टूटे हुए गिरे दांत आदि का सैंपल लेकर वैज्ञानिक तरीके से जांच कर रही है। वही मृत महिला के बाएं हाथ में पूनम देवी या नूतन देवी लिखा हुआ है। मृत महिला पैर में पायल, हाथ में चूड़ी, कान में बाली, हरे रंग छींटदार साड़ी, लाल रंग की ब्लाउज,हाथ में ताबीज पहने हुई है। वहीं पुलिस शव को कब्जे में लेकर मृत महिला की ग्रामीणों से पहचान कराने की कोशिश की। लेकिन समाचार लिखे जाने तक मृत महिला की पहचान नहीं हो सकी है। वहीं पुलिस द्वारा शव को पोस्टमार्टम हेतु बांका भेज दिया गया। वहीं घटना को लेकर एसडीपीओ विपिन बिहारी ने बताया कि पुलिस सभी बिंदुओं को ध्यान में रखकर वैज्ञानिक तरीके से अनुसंधान कर रही है एवं घटना का पता लगाने में जुटी हुई है। वही ग्रामीणों द्वारा मृत महिला के अस्त-व्यस्त कपड़े देख दुष्कर्म कर हत्या कर देने की बात कही जा रही है। हालांकि बात चाहे जो भी हो पोस्टमार्टम के बाद ही घटना के सही कारणों का पता चल सकेगा। वहीं मालूम हो की 8 - 9 माह पूर्व भी उक्त घटनास्थल के 200 मीटर आसपास एक 25 वर्षीय युवक की धारदार हथियार से गला रेतकर निर्मम हत्या कर दी गई थी, तथा कई माह पूर्व हथियार दिखाकर इसी मार्ग में एक सीएसपी संचालक के साथ भी लूटपाट किया गया था। वहीं बार-बार हो रहे इस घटना से इस मार्ग में आने जाने वाले लोगों में दहशत का माहौल है।

मिस कॉल से हुआ प्यार, फिर हुआ कुछ ऐसा कि मुखिया जी ने लव स्टोरी को मुकाम तक पहुंचाया

दैनिक बिहार पत्रिका/कुमार चंदन

बांका: जिले के अमरपुर प्रखंड अंतर्गत बल्लीकित्ता पंचायत के रामचंद्रपुर इटहरी गांव में एक ऐसी प्रेम कहानी सामने आयी है, जो भूल से हुई एक मिसकॉल से प्यार परवान चढ़ा.. गलती से की गई एक मिसकॉल ने ऐसा कनेक्शन जोड़ा कि लड़की के घरवालों से लेकर पंचायत के मुखिया तक सब हलकान हो गए। उस प्रेम कहानी का ऐसा अंत हुआ जो पूरे क्षेत्र में चर्चा का विषय बन गया। दरअसल रामचंद्रपुर इटहरी गांव निवासी संजय तांती की पुत्री आशा कुमारी 6 महीने पहले अपने किसी परिचित को मोबाइल से फोन कर रही थी। किसी गफलत में उससे गलत नंबर लग गया, उसे एहसास हुआ तो उसने तुरंत फोन काट दिया। यह फोन गोड्डा जिले के पथरगामा थानान्तर्गत ननाईचक गांव के वासुदेव कुमार को लगा था। अपने मोबाइल पर एक अंजान नंबर देखकर जब उसने रिटर्न कॉल किया तो आशा से बात हो गई। महज चंद सेकेंड की बात से दोनों के तार जुड़ने लगे और यह सिलसिला आगे बढ़ता चला गया। यह बात दोनों के बीच मुहब्बत के फूल खिलाने लगी। वासुदेव आशा से मिलने के लिये बेताब हो गया तो इधर आशा भी उसे दिल दे बैठी थी। एक दिन वासुदेव ने अचानक आशा से मिलने का फैसला किया और सोमवार को उसने मिलने रामचंद्रपुर इटहरी घर पर ही पहुंच गया। मामले की जानकारी ग्रामीणो ने पंचायत के मुखिया सदानंद मंडल को दिया। जानकारी मिलते ही पंचायत के मुखिया गांव पहुंचकर दोनो पक्षों के परिवार से बात विचार किया। गांव में काफी देर तक हाई वोल्टेज ड्रामा चलती रही। हाई वोल्टेज ड्रामें के बाद दोनों परिवार के सदस्यो की रजामंदी से पंचायत का मुखिया के नेतृत्व में गांव के ही सिंधु विभुति नाथ मंदिर में पुरे विधि विधान से दोनो परिवार की उपस्थिती में प्रेमी और प्रेमिका की शादी करा दिया गया। ग्रामीण महिलाओ की मंगल गीतों से पुरा वातावरण शादी के माहौल में डुब गई। इस अवसर पर पंचायत के मुखिया समेत चिगो तांती,ओमप्रकाश यादव,बोंगी तांती,गुलशन मंडल,अक्षय मंडल समेत अन्य ग्रामीण उपस्थित रहे।

मामूली विवाद को लेकर दो पक्षों में मारपीट एक महिला जख्मी

दैनिक बिहार पत्रिका/उमाकांत साह

चांदन/बांका:- आनंदपुर थाना क्षेत्र कुसुम जोरी पंचायत के हेमीया देवी पति पीठो दास ने आंनदपुर थाना में आवेदन देकर कार्रवाई करने कि गुहार लगाई है। आवेदन में बताईं कि मंगलवार रात्रि आठ बजे गांव के रामदेव दास,व भैंसूर भूचो दास मेरे पति पीठो दास के साथ किसी बात को लेकर विवाद उत्पन्न कर धक्का मुक्की करने लगा, शोरगुल सुनकर जब दोड़ कर आई तभी रामदेव दास ने लाठी चलाकर मेरा सिर फाड़ दिया, जिससे मैं लहुलुहान होकर जमीन पर गिर गई। वहीं दूसरी पक्ष के रामदेव दास ने बताया कि हम अपने बहन से किसी विवादित मामले को लेकर बातचीत कर रहा था, तभी पीठो दास पिता जगदीश दास मेरे घर आकर मार-पीट करने लगा। इस संदर्भ में आंनदपुर थाना अध्यक्ष विपिन कुमार ने बताया कि पुलिस मामले को छानबीन कर रही है। वहीं गंभीर रूप से घायल हेमिया देवी पति पीठो दास ने बताई कि थाना में आवेदन देने के बावजूद इलाज के लिए थाना से किसी प्रकार कि कागज नहीं दिया गया। अंत में कटोरिया रेफ़रल अस्पताल इलाज कराई।

पंचायत भवन में हुआ ग्रामीण पोस्ट ऑफिस का शुभारम्भ

गांव के लोगों को मिलेगी सुविधा

दैनिक बिहार पत्रिका/अमित कु. शर्मा

बौंसी/बांका:जिलाधिकारी अंशुल कुमार के निर्देश पर प्रखंड के असनाहा पंचायत स्थित पंचायत सरकार भवन में बुधवार से पोस्ट ऑफिस कार्यालय की शुरुआत की गई.। इसके कार्य के सफल सुलभ संचालन के लिए यहां पर पोस्ट मास्टर अपूर्व कुमार को तैनात किया गया है। बुधवार को पंचायत सरकार भवन में पोस्ट ऑफिस का फीता काटकर पंचायत के मुखिया भरत प्रसाद मंडल और प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी के द्वारा उद्घाटन किया गया। मालूम हो कि अब क्षेत्र के लोगों को पोस्ट ऑफिस से संबंधित कार्य के लिए बौंसी बाजार अथवा कहीं अन्य दूर नहीं जाना पड़ेगा। इस मौके पर पंचायत तकनीकी सहायक विनीत कुमार पंचायत समिति सदस्य धर्मेंद्र कुमार पासवान मुखिया प्रतिनिधि विजय कुमार मंडल सहित अन्य मौजूद थे। ग्रामीण पोस्ट ऑफिस के खुल जाने से आसपास के लोगों को काफी सुविधा होगी लोगों में काफी हर्ष है। पोस्ट ऑफिस से संबंधित शिवाय अब आसपास के गांव के लोगों को भी मिलेगी आजादी के बाद यहां यह सेवा शुरू हुई है।

छपरा में सैंड आर्टिस्ट ने बालू पर उकेर कर दी शारदा सिन्हा को श्रद्धांजलि

दैनिक बिहार पत्रिका / छपरा

छठ पर्व पर अपने आवाज का जादू सीखने वाली स्वर कोकिला पदम श्री शारदा सिन्हा अब हमारे बीच नहीं है। बीती रात उनका निधन हो गया। उनके निधन से पूरे बिहार ही नहीं पूरे देश में शोक की लहर है। पटना में पूरे राजकीय सम्मान की साथ अंतिम संस्कार किया जायेगा। संभवत: सात नवंबर को उनका अंतिम संस्कार होगा। इनके निधन से लोगों में काफी दु:ख है बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार,उप मुख्यमंत्री विजय सिन्हा, सम्राट चौधरी, केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी,राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव, प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने भी पदम श्री शारदा सिन्हा के निधन पर दु:ख व्यक्त किया है।वही छपरा के रहने वाले सैंड आर्टिस्ट अशोक ने भी सैंड से पदम श्री स्वर्गीय शारदा सिन्हा की बालू से तस्वीर बनाकर स्वर कोकिला को श्रद्धांजलि अर्पित की है।इस अवसर पर अशोक ने कहा कि बिहार की वह जादूई आवाज हमेशा के लिए चीर निंद्रा में चली गई है।हम सभी उनकी आत्मा की शांति की कामना करते हैं।

छठ पर्व में खरीदारी को लेकर उमड़ी लोगों की भीड़, घंटों लगा रहा जाम

दैनिक बिहार पत्रिका/कुमार चंदन

बौंसी/बांका:- बिहार का विश्व प्रसिद्ध लोक आस्था का महापर्व छठ पूजा की तैयारियां दीपावली के साथ ही शुरू हो जाती है। प्रदेश में रहने बाले लोग छठ पूजा के लिए बिहार पहुंचने लगे हैं। जिस का नजारा रेलवे स्टेशन से लेकर बस स्टैंड तक देखने को मिलता है। मालूम हो कि, छठ पूजा का पर्व मुख्य रूप से बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश में मनाया जाता है। लेकिन इन इलाकों के लोग देशभर में जहां भी निवास करते हैं। वहां छठ पूजा का उत्सव देखा जा सकता है। मालूम हो कि, दीपावली के छठवें दिन यानी हिंदू कैलेंडर विक्रम संवत के कार्तिक मास शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि को छठ पूजा के रूप में मनाया जाता है। यह बिहार में सबसे कठिन व्रतों में से एक है। मान्यता है कि, विधि विधान से छठ मैया का व्रत रखने वाले एवं पूजन करने वाले दंपत्ति को संतान सुख मिलता है। साथ ही पारिवारिक सुख समृद्धि आती है। छठ पूजा का व्रत सूर्य देव को समर्पित होता है। जो मुख्य रूप से 3 दिनों तक चलता है। नहाए खाए के दिन से छठ पूजा व्रत की शुरुआत होती है। व्रत करने वाले परिवार घर को साफ, पवित्र करके पूजा सामग्री एक स्थान पर रखते हैं। इस दिन सभी लोग सात्विक आहार लेते हैं। छठ पूजा का सबसे महत्वपूर्ण दूसरा दिन खरना होता है। इसे लोहंडा भी कहते हैं। खरना वाले दिन पूरे दिन व्रत रखा जाता है और रात में पूरी पवित्रता के साथ बनी गुड़ की खीर का सेवन किया जाता है। खीर खाने के बाद अगले 36 घंटे का कठिन व्रत रखा जाता है। खरना के दिन छठ पूजा का प्रसाद भी तैयार किया जाता है। खरना के अगले दिन छठी मैया की पूजा होती है। इस दिन जती डूबते सूर्य को अर्जा देख कर जल्दी उगने और संसार पर कृपा करने की प्रार्थना करते हैं। छठ पूजा के अगले दिन उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ ही छठ का कठिन व्रत संपक्ष हो जाता है। इसी कड़ी में छठ पूजा को लेकर प्रखंड क्षेत्र में तैयारी जोर शोर से चल रही है। छठ पर्व की खरीदारी को लेकर बौंसी मुख्य बाजार में लोगों की भारी भीड़ उमड़ रही है। भीड़ का आलम यह है कि, जाम की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। बुधवार को भी भागलपुर दुमका मुख्य मार्ग पर जाम लग गया। सुबह से ही खरीदारी करने के लिए श्रद्धालु सहित अन्य लोग बाजार पहुंचे। ज्यादा भीड़ होने के कारण भागलपुर हंसडीहा मुख्य मार्ग सहित डेम रोड में जाम की स्थिति उत्पन्न हो गई। बाहनों की लंबी कतार बाजार में लग गई। जिससे राहगीरों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। बाहन चालकों के साथ साथ पैदल चालकों को भी काफी परेशानियां हुई। वहीं जाम का शिकार एंबुलेंस भी हुआ। जिस बजह से मरीज को भी जाम में काफी इंतजार करना पड़ा। वहीं दूसरी ओर छठ पूजा को लेकर मंदार हिल स्टेशन पर यात्रियों की भारी भीड़ देखी गई।

लोक आस्था के महापर्व छठ की समस्त प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं : मंगल पाण्डेय

दैनिक बिहार पत्रिका/धीरज गुप्ता

गया।स्वास्थ्य एवं कृषि मंत्री श्री मंगल पाण्डेय ने नहाय-खाय से शुरू चार दिवसीय लोक आस्था के महापर्व छठ पर समस्त प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकानाएं दी हैं। उन्होंने कहा है कि छठी मैया सभी को सुख, समृद्धि व आरोग्य प्रदान करें। पाण्डेय ने कहा है कि लोक आस्था का यह महापर्व समाज को समता और समरसता का सार्थक संदेश भी देता है। जाति, धर्म, अमीर-गरीब और हर स्तर पर भेदभाव को मिटाने वाला यह पर्व आज केवल बिहार में ही नहीं बल्कि पूरे देश और दुनिया में भारतवंशियों के बीच काफी लोकप्रिय है। करोड़ों लोग अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति और सुख, शांति व समृद्धि के लिए चार दिनों के इस कठिन व्रत को पूरी पवित्रता के साथ करते हैं। उन्होंने कहा कि इस पर्व में षष्टी माता के साथ ही सूर्यदेव की उपासना की जाती है। सूर्य आरोग्य के देवता है। मेरी कामना है कि सभी प्रदेशवासियों के जीवन में खुशहाली आएं।

शारदा सिन्हा ने अपनी आवाज़ से भारतीय लोक संगीत को नया जीवन दिया है - डॉ मनीष पंकज मिश्रा

दैनिक बिहार पत्रिका/गया

मशहूर लोक गायिका शारदा सिन्हा का निधन की सूचना मिलने पर भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा के सह प्रभारी डॉ मनीष पंकज मिश्रा सहित भाजपा नेता के द्वारा शोक व्यक्त किया गया अपने शोक प्रगट करते हुए कहाडॉ मनीष पंकज ने कहा हम सबको यह सुनकर गहरा दुख हुआ कि लोक गायिका शारदा सिन्हा का निधन हो गया है। भारतीय लोक संगीत की यह अद्वितीय आवाज़ हमें हमेशा अपनी यादों में सजीव रहेगी। उनकी गायकी ने न केवल बिहार, बल्कि सम्पूर्ण भारत के सांस्कृतिक आकाश को आलोकित किया है। शारदा सिन्हा ने अपनी आवाज़ से भारतीय लोक संगीत को नया जीवन दिया, और उनकी गायन शैली में एक विशेष प्रकार की सादगी, गहराई और भावनात्मक जुड़ाव थाजो हर श्रोता को छू जाता था शारदा सिन्हा का संगीत समाज के हर वर्ग को जोड़ने में सक्षम था। उनकी आवाज़ में देश के विभिन्न हिस्सों के लोक संगीत की विविधता और समृद्धि का अद्वितीय प्रतिबिंब था। शारदा जी का योगदान भारतीय संगीत के क्षेत्र में अनमोल रहेगा।

हॉरर-कॉमेडी फिल्म के लिए साथ आए सिद्धांत चतुवेर्दी और दिशा पाटनी, अगले साल शुरू होगी शूटिंग

सिद्धांत चतुर्वेदी अब अपनी नई फिल्म के लिए तैयार हैं। सोशल मीडिया पर अभिनेता की नई फिल्म को लेकर कई तरह की जानकारियां सामने आ रही हैं। हाल ही में ऐसी खबरें आई थीं कि उन्हें विकास बहल की भविष्य की साइंस-फिक्शन एक्शन फिल्म मिल गई है, जिसमें उनके साथ वामिका गब्बी और जया बच्चन भी हैं। साथ ही कुछ दिनों पहले बताया गया था कि सिद्धांत एक हाई-कॉन्सेप्ट कॉमिक कैपर के लिए बातचीत कर रहे हैं और इसमें श्रीलीला और नोरा फतेही भी हो सकती हैं वहीं, अब अभिनेता की एक और नई फिल्म के बारे में जानकारी सामने आई है। रिपोर्ट्स के अनुसार, सिद्धांत को एक और रोमांचक फिल्म मिल गई है, वह भी हॉरर कॉमेडी जॉनर में। सिद्धांत चतुर्वेदी और दिशा पाटनी कथित तौर पर एक नई हॉरर-कॉमेडी फिल्म में स्क्रीन साझा करने के लिए तैयार हैं। इस परियोजना का निर्देशन मिलाप जावेरी करेंगे, जो पहली बार इस शैली में काम कर रहे हैं।

इस दिन शुरू होगी शूटिंग

दोनों कलाकार इस प्रोजेक्ट को लेकर उत्साहित हैं, क्योंकि यह हॉरर कॉमेडी का एक अनूठा रूप पेश करता है। यह फिल्म 2025 की शुरुआत में फ्लोर पर आएगी। कथित तौर पर मिलाप जावेरी इस हॉरर कॉमेडी फिल्म का निर्देशन करने के लिए उत्साहित हैं। अब इस खबर के बाद से प्रशंसक भी काफी खुश हैं।

फिल्म का निर्माण और निर्देशन

बताया गया कि मिलाप जावेरी जनसमूह के बारे में सोचते हैं और उन्होंने यह सुनिश्चित किया है कि वे इसमें व्यावसायिक तत्व भी जोड़ेंगे, ताकि फिल्म व्यापक दर्शकों को आकर्षित कर सके। फिल्म को अश्विन वर्दे और सुभाष काले निर्मित करेंगे। यह परियोजना मिलाप जावेरी की बढ़ती निर्देशकीय परियोजनाओं की सूची में एक और अतिरिक्त होगी, जिसमें आगामी कॉमेडी फिल्म मस्ती 4 भी शामिल है।

सिद्धांत-दिशा की आने वाली फिल्में

सिद्धांत चतुर्वेदी को हाल ही में एक्शन फिल्म युद्रा में देखा गया था और नेटफ्लिक्स फिल्म खो गए हम कहां (2023) में उनके प्रदर्शन के लिए उन्हें तारीफें मिलीं। ऐसा कहा जा रहा है कि वह श्रीलीला और नोरा फतेही के साथ एक कॉमिक के लिए भी बातचीत कर रहे हैं। इस बीच, दिशा पटानी ने योद्धा (2024) में अपने प्रदर्शन से दर्शकों को प्रभावित किया और कल्कि 2898 एडी में एक कैमियो किया। उनकी आने वाली फिल्मों में कंगुवा और मल्टीस्टारर वेलकम टू द जंगल शामिल हैं।

नोरा फतेही को करियर के शुरुआत में ही लेनी पड़ी थेरेपी

नोरा फतेही ने हाल ही में बॉलीवुड में अपने सफर के बारे में बात की। इंडियन फिल्म फेस्टिवल ऑफ मेलबर्न (आईएफएफएम) में अभिनेत्री ने खुलासा किया कि कैसे एक न्यूकमर के रूप में उन्होंने कई कठिन परिस्थितियों का सामना किया। शुरुआत में, वह ऐसे लोगों से मिलीं जो दावा करते थे कि वे उनकी मदद कर सकते हैं लेकिन उनके इरादे छिपे हुए थे। कुछ लोगों ने उन्हें बड़े प्रोडक्शन हाउस से जोड़ने का वादा किया, लेकिन इससे अक्सर डरावनी स्थितियां पैदा हुईं। नोरा ने कुछ अन्य बड़े खुलासों से भी हर किसी को दंग कर दिया है।

नोरा ने सुनाए मासूम दिनों के डरावने किस्से

नोरा फतेही सिर्फ 22 साल की थीं और कनाडा से भारत में नई-नई बसी थीं। किसी को जाने बिना, वह अक्सर गलत लोगों पर भरोसा करती थीं, यह मानकर कि उनके इरादे अच्छे थे। राजीव मसंद के साथ बातचीत में नोरा ने बताया, अब, मैं कहूंगी कि मैं आपके साथ क्यों आ रही हूं? आप मुझसे क्या चाहते हैं? जाहिर है, कोई भी कुछ भी मुफ्त में नहीं करता है, लेकिन उस समय, मैं ऐसी थी जैसे कि भगवान ने इस व्यक्ति को मेरे पास भेजा है और मैंने अपने भोलेपन की वजह से बहुत सारे बेवकूफों का अनुसरण किया।

हर राह पर मिली चुनौती

उन्हें धीरे-धीरे पता चला कि जब ये लोग उन्हें सही लोगों से मिलवाते थे, तब भी इनमें से कुछ लोग बदले में कुछ पाने की उम्मीद करते थे, जिससे उन्हें असुरक्षित महसूस होता था। नोरा ने कहा, इसने मुझे वास्तव में डरावनी स्थितियों में डाल दिया, जहां आखिरी में शख्स ऐसा कहेगा कि चलो, मुझे इससे क्या मिलेगा? और इसने मुझे इन डरावनी स्थितियों में पहुंचा दिया जहां मुझे उस व्यक्ति से लड़ना पड़ा। ये वाकई में बेहद अजीब था।

धीरे-धीरे समझ आए दांवपेंच

नोरा ने धीरे-धीरे हताश दिखने की स्थिति से बचना सीख लिया, क्योंकि यह अक्सर मुसीबतों को आमंत्रित करता था। इसके बजाय, उन्होंने कहना शुरू कर दिया कि वह अभिनय के लिए तैयार हैं लेकिन पढ़ाई के लिए घर लौटने के लिए भी तैयार हैं। इस दृष्टिकोण ने उन्हें अवांछित ध्यान से बचने में मदद की। हालांकि, नोरा को इंडस्ट्री में जिस अस्वीकृति का सामना करना पड़ा, उससे उनके मानसिक स्वास्थ्य पर काफी असर पड़ा और अभिनेत्री ने इससे निपटने के लिए थेरेपी की मांग की।

थेरेपी लेने की पड़ गई जरूरत

नोरा को याद आया कि लोग पूछते थे कि क्या वह अगली कैटरीना कैफ बनना चाहती हैं, जिससे उनका सपना असंभव लगने लगा था। नोरा ने अपनी बात में जोड़ा, आप में से बहुत से लोग अच्छे नहीं हैं, बहुत से लोग क्या आप अगली कैटरीना कैफ बनना चाहते हैं? जैसे सवाल पूछकर आपका मनोबल तोड़ देते हैं। मैंने थेरेपी की तलाश की क्योंकि जब आपको बहुत अधिक अस्वीकृति मिलती है, जो मुझे बहुत मिली तो आपके मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा असर पड़ता है। उन्होंने स्वीकार किया कि यह एक चुनौतीपूर्ण समय था, लेकिन इसने उन्हें मजबूत बनाया। अब, नोरा को बॉलीवुड में सफलता मिल गई है, लेकिन उनकी यात्रा ने उन्हें सावधान रहना और खुद के प्रति सच्चा रहना सिखाया है।

मंडे टेस्ट में फेल हुई सिंघम अगेन, कलेक्शन में आई बड़ी गिरावट

अजय देवगन की सिंघम अगेन लोगों के दिलों में अपनी खास जगह नहीं बना सकी है। पहले दिन से ही यह फिल्म अच्छी कमाई नहीं कर सकी है। बड़ी स्टारकास्ट और जमकर प्रचार के बावजूद फिल्म की कमाई का ग्राफ लगातार नीचे आ रहा है। आइए जानते हैं कि चौथे दिन फिल्म ने कितना कारोबार किया है। बॉक्स ऑफिस पर स्थिति खराब सिंघम अगेन की चर्चा बीते काफी समय से चली आ रही थी। इसको लेकर टीम की ओर से काफी ज्यादा प्रचार किया गया, लेकिन कमजोर कहानी इस फिल्म के आड़े आ गई और अब इस पर फ्लॉप होने का खतरा भी मंडराने लगा है। पहले दिन से ही इस फिल्म की बॉक्स ऑफिस पर स्थिति डांवाडोल है। वहीं, अब सोमवार की परीक्षा भी यह फिल्म पास नहीं कर सकी है। शुरुआती आंकड़ों की मानें तो चौथे दिन फिल्म की कमाई में बड़ी गिरावट नजर आई है। सोमवार को फिल्म ने खबर लिखे जाने तक महज 12.51 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया था। फिल्म की कुल कमाई अब तक 134.26 करोड़ रुपये तक ही पहुंच सकी है। कलेक्शन के ये आंकड़े निर्माताओं के लिए किसी बड़े झटके से कम नहीं है। सिंघम अगेन से बेहतर स्थिति कार्तिक आर्यन की भूल भुलैया 3 की है। यह फिल्म टिकट खिड़की पर लगातार अच्छा कारोबार कर रही है।

हिट की राह हुई मुश्किल

सिंघम अगेन का बजट करीब 350 करोड़ के आस-पास है। फिल्म के हिट होने के बीच सबसे बड़ी बाधा इसकी लागत ही है। बड़े सितारों से सजी इस फिल्म को हिट होने के लिए 700 करोड़ रुपये का बिजनेस करना होगा, जो कि मौजूदा स्थिति के हिसाब से काफी मुश्किल ही नजर आ रहा है।

डंकी और जुड़वा 2 को लेकर बोलीं तापसी, मैंने पैसों के लिए ये फिल्में नहीं की बल्कि...

अभिनेत्री तापसी पन्नू को उनकी अदाकारी के लिए लोग पसंद करते हैं, फिर वो कॉमेडी रोल के लिए हो या कोई गंभीर किरदार। तापसी पन्नू कई बड़ी फिल्मों में नजर आ चुकी हैं। शाहरुख खान की फिल्म डंकी को लेकर तापसी ने कुछ बातें कही हैं। उन्होंने बताया कि बड़े बजट की फिल्मों में भी उन्हें बहुत ज्यादा रुपये नहीं मिले थे। फिल्म के चयन को लेकर तापसी ने इंडियन एक्सप्रेस को दिए इंटरव्यू में बताया कि इसके साथ ही फिल्म करने के बाद प्रशंसकों को प्यार और आलोचना दोनों ही आपके रास्ते में आते हैं। तापसी का मानना है कि वे जो फिल्में करती हैं, उनमें ब्लॉकबस्टर लिखा नहीं होता, लेकिन जब उन्हें प्रशंसकों का प्यार मिलता है तो वे ब्लॉकबस्टर हो जाती हैं। अपनी फिल्मों के चयन को लेकर उन्होंने कहा कि वह जिस तरह की फिल्म करना चाहती हैं, उनका चयन करना मुश्किल है। तापसी ने कहा कि लोगों को लगता है कि मैंने जुड़वा और डंकी जैसी फिल्में पैसों के लिए की हैं, लेकिन नहीं। ये इसका बिल्कुल उल्टा है। मुझे उन फिल्मों के लिए ज्यादा रुपये मिले हैं, जिनमें मुख्य किरदार मैं थी। तापसी ने कहा कि निर्माताओं को लगता है कि फिल्म में पहले से बड़ा अभिनेता है, हमें कोई और बड़ा सितारा नहीं चाहिए। रोजाना हम ऐसी ही चीजों से गुजरते हैं।

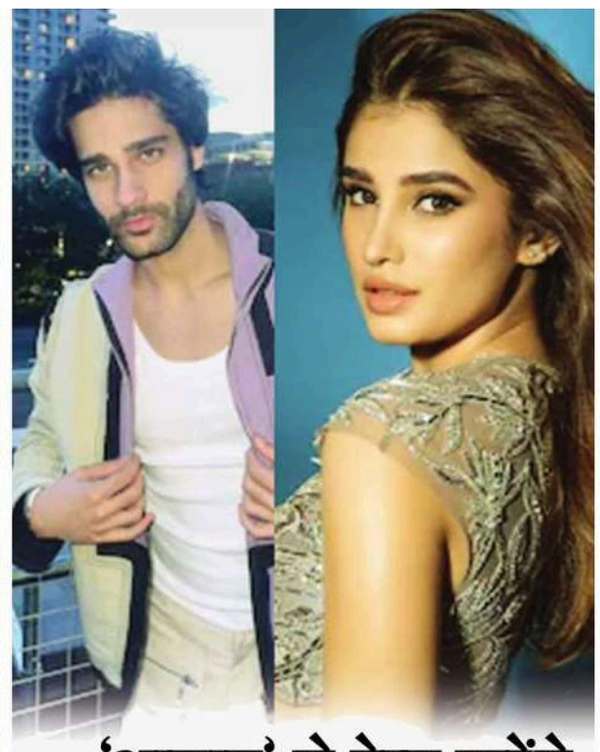

'आजाद' से डेब्यू करेंगे अजय देवगन के भतीजे अमन, साथ दिखेंगी रवीना टंडन की बेटी राशा

फिल्म जगत को एक से बढ़कर एक सफल फिल्में देने वाली अभिनेत्री रवीना टंडन की बेटी राशा थडानी डेब्यू के लिए तैयार हैं। राशा के साथ अजय देवगन के भतीजे अमन देवगन नजर आएंगे। हिंदी सिनेमा की खूबसूरत एक्टर रवीना टंडन की बेटी राशा थडानी अभिषेक कपूर द्वारा निर्देशित आगामी फिल्म 'आजाद' में नजर आएंगी। फिल्म में उनके साथ अमन दिखेंगे। फिल्म का निर्देशन अभिषेक कपूर करने जा रहे हैं। अभिषेक के सफल निर्देशक माने जाते हैं। उन्होंने मनोरंजन जगत को 'रॉकऑन', 'केदारनाथ' और 'चंडीगढ़ करे आशिकी' जैसी फिल्में दी हैं। निर्माताओं ने बुधवार को आगामी फिल्म टाइटल का खुलासा कर प्रशंसकों को एक झलक दिखाई है। रोमांचक फिल्म अमन देवगन और राशा थडानी की बड़ी शुरुआत है। फिल्म का टीजर इस दिवाली पर सिनेमाघरों में बड़ी फिल्मों जैसे सिंघम अगेन और भूल भुलैया 3 के साथ रिलीज किया जाएगा। राशा और अमन की पहली झलक 1 नवंबर से देख सकेंगे। रॉनी स्क्रूवाला और प्रज्ञा कपूर द्वारा निर्मित आजाद भरपूर मनोरंजन का वादा करती है। फिल्म अगले साल जनवरी (2025) में बड़े पर्दे पर रिलीज होगी। चंडीगढ़ करे आशिकी के बाद अभिषेक की यह पहली फिल्म है। अभिषेक ने म्यूजिकल ड्रामा रॉकऑन से बड़ी सफलता हासिल की, जिसमें अभिनेता फरहान अख्तर और प्राची देसाई ने अर्जुन रामपाल के साथ मुख्य भूमिकाएं निभाई थी। रिलीज के बाद फिल्म को आलोचकों ने काफी सराहा था। फिल्म का कॉन्सेप्ट, कहानी, साउंडट्रैक और कलाकारों के प्रदर्शन की जमकर प्रशंसा हुई। हालांकि, यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर औसत व्यावसायिक सफलता वाली रही। इसके बावजूद कपूर के करियर के लिए यह फिल्म शानदार साबित हुई और उन्हें हिंदी में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला। अभिषेक कपूर ने साल 2013 में दिवंगत अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत, राजकुमार राव, अमित साध और अमृता पुरी स्टारर फिल्म 'काई पो छे' लिखी थी। उन्होंने फिल्म का निर्देशन भी किया था। यह फिल्म चेतन भगत के उपन्यास 'द 3 मिस्टेक्स ऑफ माई लाइफ' (2008) पर आधारित थी और इसका विश्व प्रीमियर 63वें बर्लिन अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में हुआ था।

एक साथ बड़े पर्दे पर नजर आएंगे सलमान खान-अजय देवगन

रोहित शेट्टी की फिल्म में करेंगे काम

निर्माता निर्देशक रोहित शेट्टी अपने कॉप यूनिवर्स की फिल्मों के कारण चर्चा में रहते हैं। रोहित शेट्टी ने दिवाली पर अपनी फिल्म सिंघम अगेन के साथ बॉक्स ऑफिस और दर्शकों के दिलों पर राज कर रहे हैं। रोहित शेट्टी अब अपनी अगली फिल्म की तैयारी में जुट गए हैं। खबरों की मानें तो रोहित शेट्टी अभिनेता सलमान खान और अजय देवगन एक साथ एक और नई और बड़ी एक्शन फिल्म के लिए काम कर रहे हैं।

सिंघम अगेन में किया कैमियो

सलमान खान और अजय देवगन की साथ में एक्शन फिल्म में काम करने वाले हैं। इस खबर को सुनने के बाद प्रशंसक काफी खुश और उत्साहित हैं। सलमान खान ने हाल ही में अजय देवगन की फिल्म सिंघम अगेन में कैमियो किया है। दोनों ही अभिनेताओं के देश में बहुत बड़ी संख्या में प्रशंसक हैं।

प्रशंसकों ने की सिंघम अगेन की तारीफ

आज बॉक्स ऑफिस पर रिलीज हुई फिल्म सिंघम अगेन को प्रशंसक काफी पसंद कर रहे हैं। इसमें सलमान खान ने दबंग सीरीज से चुलबुल पांडे की अपनी लोकप्रिय भूमिका में कैमियो किया है। प्रशंसक उनकी भूमिका को देखकर खुशी से झूम उठे और ट्विटर पर अपनी प्रतिक्रियाएं साझा कीं।

साल 2010 में आई थी फिल्म दबंग

साल 2010 में अभिनेता सलमान खान अपनी फिल्म दबंग में चुलबुल पांडे का किरदार निभाया था, फिल्म को प्रशंसकों ने बहुत पसंद किया है। साथ ही अजय देवगन के साथ रोहित शेट्टी ने पहली कॉप यूनिवर्स फिल्म सिंघम के साथ शुरुआत की थी। इन सभी फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर बहुत ही अच्छा प्रदर्शन किया था। रोहित शेट्टी की कॉप यूनिवर्स फिल्म सिंघम अगेन में कई सारे बॉलीवुड सितारे नजर आए। इस फिल्म में अभिनेता अजय देवगन के साथ दीपिका पादुकोण, रणवीर सिंह, करीना कपूर, सलमान खान, टाइगर श्रॉफ, अक्षय कुमार, अर्जुन कपूर जैसे सितारे नजर आए।

यूं लगा जन्नत में है ऊटी

मुन्नार की मखमली खूबसूरती से तीन दिन तक रू-ब-रू रहने के बाद हमारी टोली ऊटी के लिए रवाना हुई तो एक उदासी-सी मन में थी। एक तो जन्नत जैसे मुन्नार से हम विदा ले रहे थे जहां से वापस आने का दिल शायद ही किसी का करे। दूसरे, मन में यह सवाल बार-बार सिर उठा रहा था कि मुन्नार को देखने के बाद ऊटी कहीं फीका लगा और अगले दो दिन बेकार चले गए, तो? मुन्नार से कोयम्बटूर और वहां से आगे ऊटी जाने के लिए यूं तो अच्छी सडक है, पर चूंकि टोली में आठ-दस बच्चे और कुछ महिलाएं भी थीं, तो बेहतर यही था कि सडक के मुश्किल सफर के बजाय ऊटी तक की दूरी ट्रेन से तय की जाए। इस फैसले की वजह मेट्टूपालयम से ऊटी तक घुमावदार पहाडी रास्तों पर रेंगने वाली टॉय ट्रेन भी थी जो खासकर बच्चों के लिए मजेदार अनुभव होता।

एक सफर में दो रंग

ऊटी तक के ट्रेन के इस सफर को हम दो हिस्सों में बांट सकते हैं। पहला, मेट्टूपालयम से कुन्नूर। यहां ट्रेन स्टीम इंजन से चलती है। स्टीम इंजन है तो जाहिर है ट्रेन की चाल भी बेहद धीमी रहती है। कुन्नूर तक चढाई ज्यादा तीखी है जिसे स्टीम इंजन अपनी कछुआ चाल से बडी आसानी से तय कर लेता है। पूरा रास्ता चट्टानी है, रास्ते में ऊंचे पेड हैं और अनेक छोटे-बडे पुल भी। कुन्नूर इस रेलखंड का एक अहम स्टेशन है जहां गाडी काफी देर रुकती है। खाने-पीने के यहां बेहतर बंदोबस्त हैं। कुन्नूर में ट्रेन स्टीम इंजन का दामन छोडकर डीजल इंजन को अपना सारथी बनाती है, और शुरू हो जाता है सफर का दूसरा हिस्सा जो कहीं ज्यादा सुकून देने वाला है। कह सकते हैं कि ऊटी का असल रंग दिखना यहीं से शुरू होता है। चाय के तराशे हुए बौने पौधे ऊंचे पेडों की जगह ले लेते हैं। अभी तक जो गहरा हरा रंग आंखों तक पहुंच रहा था, उस पर लगता है जैसे प्रकृति ने दिल खोलकर धूप मसल दी हो। चारों तरफ खिली हुई हरियाली.. मन को प्रफुल्लित करती हरियाली। और इस हरियाली के बीच गर्व से सिर उठाए खडे छोटे-छोटे घर.. एक अलग ही दृश्य है यह, जो एक बार दिल पर छप गया तो फिर कभी धूमिल होने वाला नहीं।

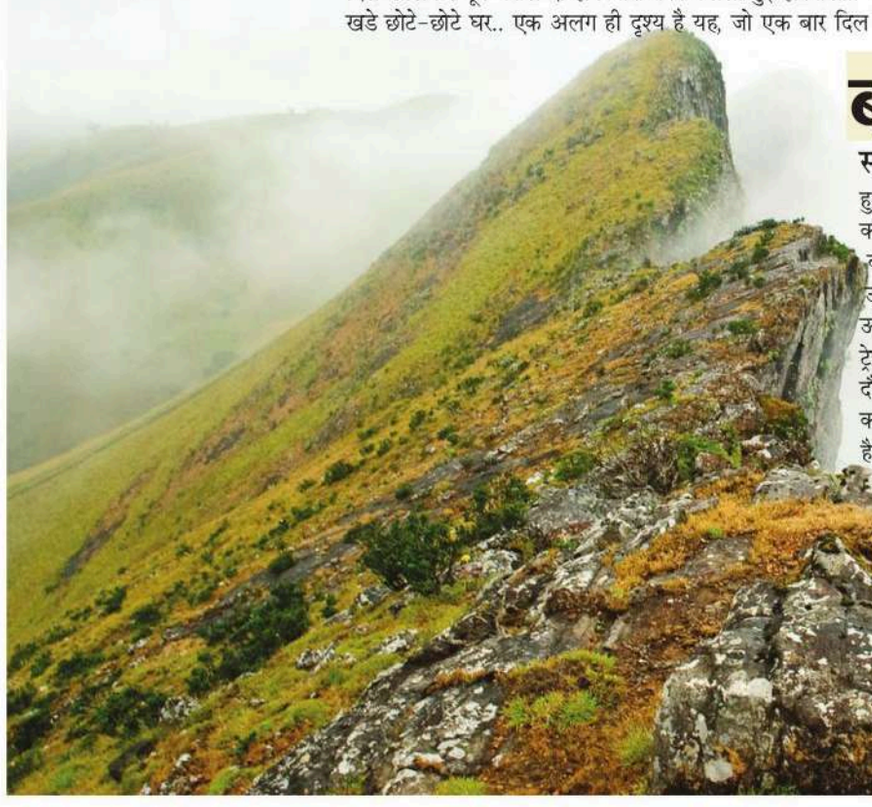

बादलों का है अलग रिश्ता

समुद्र तल से 2240 मीटर की ऊंचाई पर स्थित ऊटी अंग्रेजों का समर रिजॉर्ट हुआ करता था। मूल रूप से यह इलाका टोडा जनजाति का घर है। उन्होंने अंग्रेजों को अपनी जमीन का एक बडा हिस्सा दे दिया था, जिस पर अंग्रेजों ने शहर बसाया। इस इलाके का असल नाम ऊटकमंड है, इसी को अंग्रेजों ने छोटा करके ऊटी कर दिया। हालांकि, अब शहर का आधिकारिक नाम उदगमंडलम है जो ऊटकमंड का तमिलीकरण है। पांच घंटे के सफर के बाद दिन में करीब 12 बजे ट्रेन उदगमंडलम स्टेशन पर जा लगी तो बूंदाबांदी हो रही थी। हम लोग मानसून के दौरान वहां गए थे। इस मौसम में बादलों का दिल कब हो जाए ऊटी को भिगोने का, कह नहीं सकते। बादलों का ऊटी से अलग ही रिश्ता है। जब-जब दिल करता है, ये बादल किसी बेसब्र प्रेमी की तरह आकर ऊटी को अपने आगोश में ले लेते हैं। इसका प्रमाण ऊटी की गोद में विचरण करते वक्त मिला। बादल चेहरे पर आ-आकर ठहरते और पानी के कण गालों पर छोडकर आगे निकल जाते। बारिश मुन्नार में भी खूब देखी हमने.. वहां भी बादल पहाडों व पेडों के साथ अठखेलियां करते दिखे। लेकिन वहां के अप्रतिम सौंदर्य को बादल अपने आलिंगन में नहीं लेते। मानो, कोई झिझक उन पर तारी रहती हो। लेकिन ऊटी में समीकरण अलग है। यहां बादल आएंगे तो पहले प्यार में डूबकर हर गोशे को छुएंगे और फिर भावुक होकर बरस पडेंगे।

खूबसूरत शहर

ऊटी की सुंदरता की किसी और जगह से तुलना बेमानी है। नीलगिरी की गोद में एक चुप्पी ओढे शहर की तस्वीर पेश करता है यह। बडे नाम वाले हिल स्टेशनों के मुकाबले जिंदगी बहुत तेज नहीं है यहां। ऊंचाई से देखो तो अंग्रेजी स्टाइल में बने घरों की छटा अलग ही है। घरों के जमावडे के बीच से झांकता वहां का मशहूर रेसकोर्स.. इसके अलावा हरे-भरे बाग, झील, गोल्फ कोर्स, स्टेशन परिसर.. हमने ऊटी का यह विहंगम नजारा डोडाबेटा टी फैक्टरी की बालकनी से देखा। यह दक्षिण भारत में सबसे ज्यादा ऊंचाई पर बनी टी-फैक्टरी है। पांच रुपये की टिकट पर चाय बनाने की प्रक्रिया यहां देख सकते हैं। ताजा चाय की महक में तलब लगना लाजिमी है। लीजिए, इलायची वाली चाय का कप भी हाजिर है आपके लिए। चुस्की लीजिए और तर-ओ-ताजा हो जाइए। यहां कई तरह की चाय बिक्री के लिए भी उपलब्ध है। हमारे साथियों ने कितनी खरीदारी की यहां, इसका पता बाहर आकर चला जब हरेक के हाथ में दो-दो थैले झूलते नजर आए।

वेनलॉक का जादू

टोडा जनजाति के घरों को तो हमने दूर से देखा, लेकिन वेनलॉक के नैसर्गिक सौंदर्य को हम अपने भीतर भरकर ले लाए। सफेद बादलों में लिपटी चटख हरे रंग की पहाडियां.. हर बार पलकें उठाते ही भीतर एक पूरी दुनिया आबाद हो रही थी, और हर सांस के साथ मानो अमृत घुलता जा रहा था शरीर में। यह स्थान ऊटी से छह मील व नौ मील के बीच स्थित है। स्थानीय लोग बोलचाल में इसे फिल्म शूटिंग पॉइंट कहते हैं। चाय की खेती होने से पहले नीलगिरी पर्वतमाला की हर पहाडी ऐसी ही होती थी। हल्की ढलान वाली इन बल खाती हुई पहाडियों की तुलना ब्रिटेन के यॉर्कशर डेल्स से की जाती है। पहले तो हमने सोचा कि बारिश में कौन चढेगा पहाडी के ऊपर, चलो रहने देते हैं। लेकिन फिर हिम्मत की तो ऊपर जाकर पता चला कि हमसे क्या छूटने जा रहा था। एक पहाडी की ढलान दूसरी पहाडी की ढलान में मिल रही थी। दूर तक जन्नत के सिवा कुछ नहीं था। ये क्या! अभी-अभी जो जगह साफ दिख रही थी, उसे अचानक सफेद जलकणों ने ढक लिया था। ठंड से हम कांप रहे थे और कानों के सिरे लाल हुए जा रहे थे।

लेकिन यकीन मानिए, वहां से वापस आने के लिए मन को समझाना मुश्किल हो रहा था। हमारे सामने जो था, वो किसी स्वप्न से कम नहीं था। हमारा ऊटी आना सफल हो गया।

छुक-छुक रेलगाडी

मुन्नार को अलविदा कहकर हम बस से कोच्चि पहुंचे, जहां से कोयम्बटूर और फिर आगे मेट्टूपालयम तक हमें ट्रेन से जाना था। मेट्टूपालयम कस्बा कोयम्बटूर से 35 किलोमीटर की दूरी पर है और यहां तक बडी लाइन की ट्रेनें जाती हैं। सफर का असल रोमांच मेट्टूपालयम से शुरू होता है जहां से नैरोगेज लाइन पर चार डिब्बों वाली ट्रेन ऊटी के लिए निकलती है। नीलगिरी पहाडियों में चीड के पेडों के बीच से मंद गति से तय होता यह सफर बेहतरीन कुदरती नजारे हमारे सामने पेश कर रहा था। कहीं ऊंचाई से गिरते पानी का शोर था, कहीं पहाडों ने अपने हरे चोगे पर सफेद बादल कंगन की तरह टांग रखे थे, तो कहीं सांप की तरह रेंगती सडक हमसे आ मिलने को बेताब दिख रही थी। रास्ते में प्रहरी की तरह खडे ऊंचे पेड और कुछ पलों के लिए ट्रेन को निगल लेने वाली सुरंगें हमारे रोमांच को दूना करने में कोई कसर नहीं छोड रहे थे। जैसे ही ट्रेन सुरंग के अंधेरे में समाती, यात्रियों का जोशभरा शोर उस अंधेरे पर भारी पडता दिखता। इस पूरे सफर के दौरान दिक्कत थी तो सिर्फ एक, और वो यह कि इस छुटकी-सी ट्रेन में बैठने की जगह बेहद तंग थी। लेकिन इस दौरान अगर आप खुद को कुदरत के मोहपाश में जकडे रहने देते हैं तो इस दिक्कत का एहसास ही नहीं होता।

कई रंग हैं ऊटी में

हमारे सामने ऊटी शहर अपने विविध रंगों को लेकर शान से खडा था। घूमने-फिरने के लिए ऊटी में और इसके आस-पास कई जगहें हैं। ऊटी की बात करें तो सबसे पहले जिक्र झील का आएगा। स्टेशन से दो किलोमीटर की दूरी पर मौजूद इस कृत्रिम झील पर सैलानियों तथा छुट्टी बिताने आए स्थानीय लोगों की भीड हमें नजर आई। 190 साल पहले यह झील जॉन सुलिवन ने बनवाई थी। यहां पर नौका विहार का आनंद लेने से हम खुद को नहीं रोक पाए। नाव में आधे घंटे तक झील की सैर के दौरान कितने ही प्यारे-प्यारे नजारों ने हमें बांधे रखा। यहां नौका विहार के अलावा मनोरंजन के अन्य साधन भी हैं, खासकर बच्चों के लिए। टॉय ट्रेन आपको झील के किनारे-किनारे चक्कर कटाकर लाती है तो लेक गार्डन में थोडी देर सुस्ताना सारी थकान भगा देगा। इसके अलावा, खाने-पीने व शॉपिंग के भी यहां खासे विकल्प नजर आए। झील के पास ही ऊटी का मशहूर थ्रेड गार्डन है, जहां धागे से रंग-बिरंगे फूल बनाए जाते हैं। यहां की खासियत है कि फूलों को हाथ से बनाया जाता है और इन्हें बनाने में सुई का इस्तेमाल भी नहीं होता। इसके अलावा, दुनियाभर में मशहूर बॉटेनिकल गार्डन यहां है जहां हजारों प्रजातियों के पेड-पौधे हैं। 22 एकड में फैले इस गार्डन में हर साल मई में होने वाले फ्लावर शो में बडी तादाद में लोग पहुंचते हैं। यहां एक अन्य आकर्षण एक पेड का करीब दो करोड साल पुराना जीवाश्म है। बॉटेनिकल गार्डन के पास ही चिल्ड्रन पार्क है। यहां जाएंगे तो लगेगा कि मखमल का कोई गलीचा आपके सामने बिछा हुआ है। बच्चों का दिल अगर यहां से आने को न करे तो इसमें उनका कोई कुसूर नहीं। ऊटी का एक अन्य आकर्षण छह एकड में फैला रोज गार्डन है। यह विजयनगरम इलाके में एल्क हिल की ढलान पर है जहां गुलाब के 17,000 से ज्यादा पौधे हैं। तभी तो इसे देश का सबसे बडा रोज गार्डन होने का गौरव हासिल है। इसके अलावा, गोल्फ कोर्स व रेस कोर्स की हरियाली वहां जाने वाले को अपने जादू में बांध लेने के लिए काफी है।

स्वामी मुद्रक, प्रकाशक सम्पादक कृष्णा टेकड़ीवाल द्वारा डिजिटल अखबार कंकड़बाग पटना से प्रकाशित। समाचार पत्र में किसी भी समाचार व लेख-आलेख पर सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी वाद-विवाद के लिए न्याय क्षेत्र पटना ही रहेगा। मोबाइल- 9801716267